Part – 4
Sub – Hindi
Class - IX

पाठ – 2
दुःख का अधिकार

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो पंक्तियों में दीजिए–

प्रश्न–1 **किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?**

उत्तर– किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

प्रश्न–2 **खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?**

उत्तर– खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बेटे को मरे हुए एक दिन ही हुआ था और वह बिना तेरहवीं किए फल बेचने आ गई थी, इसलिए लोग सूतक मानकर उससे खरबूज़े नहीं खरीद रहे थे।

प्रश्न–3 **उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?**

उत्तर– उस स्त्री को देखकर लेखक के मन में व्यथा–सी उठी। वह उसके दुःख को जानने के लिए बेचैन हो उठा।

प्रश्न–4 **उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?**

उत्तर– उस स्त्री का लड़का जब पके खरबूज़े तोड़ रहा था, तभी मेड़ की नमी में छिपे साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उसे डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न–5 **बुढ़िया को कोई भी उधार क्यों नहीं देता?**

उत्तर– बुढ़िया क बेटे की मृत्यु के पश्चात् उसे कोई भी उधार नहीं देता, क्योंकि उन्हें पैसे वापस न मिलने की आशंका थी।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25–30 शब्दों में) लिखिए।

प्रश्न–1 **मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?**

उत्तर– मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है, क्योंकि पोशाक समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है और कई दरवाज़ों को बंद भी कर देती है।

प्रश्न–2 **पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?**

उत्तर– जब हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं, उस समय यह पोशाक बंधन और अड़चन बन जाती है।

प्रश्न–3 लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर– लेखक ने देखा कि फुटपाथ पर, जहाँ अधेड़ स्त्री बैठी रो रही थी, उसके समीप बैठने में लेखक की पोशाक व्यवधान डाल रही थी, इसलिए लेखक स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया।

प्रश्न–4 भागवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था? 'दुःख का अधिकार' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर– भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था। वह अपनी ज़मीन पर हरी सब्ज़ियाँ एवं खरबूज़े जैसे फल उगाया करता था और उन्हें बेचता था।

प्रश्न–5 लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर– लड़के की मृत्यु के पश्चात् उसके घर में परिवार का पालन–पोषण करने वाला कोई नहीं था। बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे और भगवाना की पत्नी बुखार से तप रही थी। बेटे के बिना बुढ़िया को कोई उधार देने को भी तैयार न था, इसलिए बुढ़िया बेटे की मृत्यु के दूसरे दिन ही खरबूज़े बेचने चल पड़ी।

प्रश्न–6 बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर– बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आई, क्योंकि वह महिला अपने जवान बेटे की मृत्यु के कारण ढाई महीने तक पलंग से न उठ सकी और पंद्रह–पंद्रह मिनट के बाद बेहोश हो जाती थी। उसके दुःख से लोग द्रवित हो उठे, जबकि बुढ़िया को पुत्र की मृत्यु का शोक मनाने का भी समय नहीं मिला, उसे खरबूज़े बेचने बाज़ार जाना पड़ा।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50–60 शब्दों में) लिखिए–

प्रश्न–1 बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या–क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में घृणायुक्त नकारात्मक टिप्पणी कर रहे थे। अधिकांश लोग उसे इस बात के लिए उलाहना दे रहे थे कि पुत्र को मरे अभी एक दिन भी नहीं हुआ था और वह बुढ़िया अगले ही दिन खरबूज़े बेचने आ गई। कुछ लोग उसे 'बेहया' और कुछ लोग उसे धन–लोभी मान रहे थे। कोई कह रहा था कि इसके घर में 'सूतक' है और यह खरबूज़े बेचकर लोगों का ईमान–धर्म खराब कर रही है।

प्रश्न–2 पास–पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर– पास–पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का तेईस बरस का जवान लड़का थोड़ी–सी ज़मीन में सब्ज़ी उगाकर परिवार का पेट पालता था। एक दिन जब वह खेत से खरबूज़े तोड़ रहा था, तब एक साँप ने उसे डस लिया। बूढ़ी माँ ने ने झाड़–फूँक कराई, पर कोई लाभ न हुआ। बेटा चल बसा और पीछे छोड़ गया एक पत्नी और दो बच्चे। बूढ़ी माँ ने अपना सब कुछ बेचकर बेटे का क्रिया–कर्म कराया। अगले दिन भूख से बिलबिलाते बच्चों और बुखार से तपती बहू के लिए खाना जुटाने हेतु बुढ़िया रोते–सुबकते खरबूज़े बेचने बाज़ार जा पहुँची।

प्रश्न–3 लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या–क्या उपाय किए?

उत्तर– लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने निम्नलिखित उपाय किए

(*i*) बुढ़िया माँ ने ओझा को बुलाकर झाड़–फूँक करवाया।

(*ii*) नागदेव की पूजा करवाई।

(*iii*) पूजा के लिए दान–दक्षिणा दी गई, जिसमें घर में बचा हुआ आटा और अनाज भी देना पड़ा।

प्रश्न–4 लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

उत्तर– लेखक बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले वर्ष अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी संभ्रांत महिला की बात सोचने लगा कि कैसे पुत्र–वियोग में वह संभ्रांत महिला ढाई माह तक पलंग से न उठी। उसे पंद्रह–पंद्रह मिनट बाद मूर्च्छा (बेहोशी) आ जाती थी। आँखों से आँसू रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। पूरा शहर पुत्र वियोगिनी उस संभ्रांत महिला के दुःख से दुःखी था।

प्रश्न–5 इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– लेखक ने जिस प्रकार पोशाक के माध्यम से समाज में व्याप्त ऊँच–नीच का वर्णन किया है, उससे दुःख व्यक्त करने के अलग–अलग मापदंड भी उजागर हुए हैं। इस पाठ में लेखक ने बताना चाहा है कि दुःख का अधिकार श्रेणी के अनुसार होता है। अमीर को दुःख प्रकट करने का पूरा अधिकार है, क्योंकि समाज में उसका सम्मान है और उसके धन से कई लोग पलते हैं, जबकि निर्धन एवं अभावग्रस्त लोगों की अपनी रोज़ी–रोटी की इतनी चिंता एवं विवशता होती है कि वे अपने पुत्र की मृत्यु का शोक भी नहीं मना सकते। समाज भी उन्हें हेय दृष्टि से देखता है। पाठ के इस कथ्य को देखते हुए 'दुःख का अधिकार' शीर्षक पूर्णतः सार्थक सिद्ध होता है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए–

प्रश्न–1 जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिरने देती हैं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखक समाज में व्याप्त दोगलेपन को उजागर करता है। लेखक के अनुसार, पोशाकें समाज को अलग–अलग श्रेणियों में विभाजित करती हैं। अच्छे एवं साफ़–सुथरे कपड़ों से संभ्रांत लोगों की पहचान होती है और फटे–पुराने गंदे कपड़े निर्धनता के सूचक होते हैं। यह भेद इतना प्रभावी है कि अच्छी पोशाक वाला व्यक्ति चाहते हुए भी निर्धन लोगों के पास नहीं जा पाता, क्योंकि कपड़ों की गरिमा उसे ऐसा करने से रोकती है।

लेखक ने अपनी इस मनःस्थिति को उस कटी पतंग के समान बताया है, जो अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि हवा की इच्छानुसार ज़मीन पर गिरती है। लेखक की संभ्रांत पोशाक भी उसे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने से रोकती है।

पश्न–2 इनके लिए बेटा–बेटी, खसम–लुगाई, धर्म–ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्ति हमारे समाज की उन कुरीतियों और बुराइयों की ओर संकेत कर रही है, जो व्यक्ति को उसकी आर्थिक स्थिति से तौलती हैं। बुढ़िया का बेटा मर चुका है। घर में बीमार बहू और भूख से बिलबिलाते बच्चे हैं घर की रोज़ी–रोटी सब्जी–फल बेचकर ही चलती है। भूखे बच्चों के लिए रोटी की व्यवस्था हेतु बुढ़िया बाज़ार जाकर खरबूज़े बेचने बैठ जाती है।

लोगों को आश्चर्य होता है कि कल ही इसका बेटा मरा है, अभी 'सूतक' चल रहा है, फिर भी इस बुढ़िया को पैसे का इतना लालच है कि धर्म–कर्म भी भूल बैठी। सूतक उतरने तक इस तरह का काम पाप है, लेकिन इस बुढ़िया के लिए न तो बेटा बड़ा है, न बेटी, न पति, न बहू–पोते। धर्म–ईमान तो कहीं है ही नहीं, जो कुछ है सब पैसे या रोटी का टुकड़ा। समाज की यह सोच कितनी घृणित है, इससे इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रश्न–3 शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और .....दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने दुःख करने जैसे स्वाभाविक भाव को भी वर्गीकृत रूप में दर्शाने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार, यदि अमीर दुःख मनाता है, तो पूरा समाज उसके दुःख में सम्मिलित होता है और यदि गरीब अपने दुःख को प्रकट करना चाहे, तो वह उसी समाज की घृणा का पात्र बनता है।

दुःख मनाने को अधिकार मात्र धनवान लोगों को है, निर्धनों को नहीं, क्योंकि वे अभावग्रस्त हैं और समाज उन्हें कुछ नहीं दे सकता। दुःख संसाधनों एवं सहूलियतों की माँग करता है। जिसके पास यह नहीं है, उसे दुःख मनाने का भी अधिकार नहीं है। प्रस्तुत पाठ का मूल व्यंग्य यही है।